

चेतना की सैद्धांतिकी

प्रा. कमलाकर देवरावजी नवधरे
हिंदी विभाग प्रमुख,
रा.सं.बिडकर कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, हिंगनघाट.

शोध सारांश

चेतना मनुष्य के जीवित होने का लक्षण है। चेतनाहीन मनुष्य उस रोड़े के समान है जो हवा या पाणी के साथ इधर-उधर लुढ़कते रहता है। चेतना विशेषता के कारण ही मनुष्य बाकी पशु-पक्षियों से अलग है। चेतना तत्व के कारण ही मानव को विभिन्न अनुभूतियां होती हैं। इसी शक्ति के कारण समाज में घटने वाली घटनाओं को देखकर, सुनकर या समझकर उस पर विचार करने के लिए वह बाधित हो जाता है। यह वह शक्ति है जिसके बल पर मनुष्य ने विभिन्न क्षेत्रों में अपना अधिपत्य प्रस्तापित किया है। चेतना की तीन अवस्थाएँ हैं- इंदं, अहम, पराअहम। चेतना के तीन स्तर माने गए हैं; चेतन, अवचेतन और अचेतन। मानव व्यक्तित्व में चेतना की अहम भूमिका है। साहित्य समाज में परिवर्तन लाता है; ऐसा जब हम सुनते हैं तो यहां परिवर्तन या बदलाव का तात्पर्य है कि समाज के लोगों की समझ, बुद्धि या चेतना में परिवर्तन। स्वतंत्रतापूर्व समय में भारत के नौजवानों में क्रांति की चेतना मैक्सिम गोर्की, सावरकर आदि लेखकों की रचनाओं को पढ़कर ही जागृत हुई थी। यदी ऐसा साहित्य नहीं लिखा जाता तो नौजवानों में क्रांति की भावना जागृत नहीं होती। मानवीय चेतना को जागृत, परिचालित करने का काम साहित्य करता है। साहित्य के माध्यम से ही विभिन्न चेतना की उत्पत्ति और विकास होता है। इसलिए चेतना की सैद्धांतिकी जानना आवश्यक है।

Keywords: चेतना, मनोविज्ञान, अवचेतन, मनोवृत्ति, अनुभूति, ज्ञानात्मकता, मनोव्यापार।

मनुष्य अपने आस-पास प्राकृतिक परिवेश में अनगिनत वस्तुओं को देखता है, स्पर्श करता है। उनमें से कुछ मूर्त-अमूर्त, प्राणवान-प्राणहीन दिखाई देती हैं। उनमें भी विचारणीय बात यह है कि, प्राणहीन की अपेक्षा प्राणवान में विकास क्षमता विद्यमान रहती है। जैसे-अली से पतंग तक का विकास, बीज से पेड़ तक का विकास। प्राणवान वस्तुओं का अपना एक अस्तित्व रहता है। इसी विकास या अस्तित्व को चेतना कहा गया है। चेतना के कारण ही यह बदलाव या परिवर्तन होते रहता है। चेतना वस्तु या व्यक्ति के जीवित होने का लक्षण है। चेतनाहीन वस्तु या व्यक्ति मृतक के समान है। चेतनाशक्ति के बल पर ही मानव आज संपूर्ण सृष्टि का उपभोक्ता बना है। वास्तविक रूप में चेतना क्या है? चेतना की उत्पत्ति कैसे होती है? चेतना के कारण क्या होता है? चेतना का क्षेत्र, महत्व क्या है? आदि बातें जानने के लिए सर्वप्रथम चेतना का अर्थ जानना जरूरी है।

चेतना का अर्थ :-

चेतना शब्द की व्युत्पत्ति 'चित्' धातू से कर्ता अर्थ में 'ल्यप्' प्रत्यय जोड़ने से 'चेतन' शब्द की निर्मिति होती है, जिसमें 'आ' प्रत्यय लगाने से 'चेतना' शब्द का निर्माण होता है। 'चित्' शब्द का अर्थ बहुत ही व्यापक है- अनुभूति, धारणा, बुद्धि, समझ, मनोवृत्ति, एकाग्रता, भावना आदि अर्थ में 'चित्' का प्रयोग होता है। 'ल्यप्' एक प्रत्यय होकर इसका अर्थ करके या करना आदि रूप में लिया जाता है।

“धर्मद्रकुमार गुप्ता ने संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश में चेतना शब्द का विग्रह करते हुए व्युत्पत्ति परक अर्थ इस प्रकार बताया है। (चित्त+यूच+टाप) इसका अर्थ बुद्धि, समझ, सजीवता, चेतना होता है।”¹

चेतना शब्द का प्रयोग गहन अर्थ में किया जाता है। विलियम्स जेम्स ने चेतना का अर्थ Consciousness बताया है। Consciousness शब्द की Conscious या Conscire शब्द से मानी जाती है, जिसका अर्थ ‘सचेत’ या ‘अभिज्ञ’ होता है। Consciousness के साथ-साथ Awareness शब्द को भी चेतना का पर्याय माना जाता है। Awareness का अर्थ ‘जागरूकता’ होता है। वैसे देखा जाए तो Consciousness और awareness दोनों शब्द का अर्थ एक ही होता है।

‘नालंदा विशाल शब्दसागर’ में चेतना का अर्थ इस प्रकार दिया है- “बुद्धि, मनोवृत्ति, ज्ञानात्मक मनोवृत्ति, स्मृति, सुधि, चेतना, होश।”² अधिकांश लोग चेतना का अर्थ किसी चीज की ओर देखना या उसे छूना मानते हैं। परंतु वास्तव में देखा जाए तो ऐसा बिलकुल ही नहीं है। चेतना मनुष्य की वह अवस्था है जब वह सचेत, जागरूक या होश में रहता है। कई बार व्यक्ति किसी चीज को देखते रहता है परंतु उसके मन में कोई और ही विचार चलता रहता है। उस विचार को चेतना कहते हैं। चेतना का संबंध आँखों से न होकर बुद्धि से होता है।

चेतना की परिभाषा, स्वरूप और व्याप्ति:-

मनुष्य की आंतरिक शक्ति को ही चेतना कहा गया है। मनुष्य बुद्धिमान होने के साथ-साथ संवेदनशील भी है। इसी कारण बाकी पशु-पक्षियों से उसे अलग स्थान प्रदान किया गया है। चेतना बाहरी न होकर भीतरी है। चेतना अमूर्त, अनुभवजन्य होने के पश्चात् भी कई भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों, साहित्यकारों, संस्थानों ने इसे अपनी-अपनी दृष्टि से परिभाषित करने का प्रयास किया है।

चेतना का संबंध मनोविज्ञान से है। आधुनिक मनोविज्ञान के जनक सिगमंड फ्रायड ने मनोविश्लेषण संबंधी कई संकल्पनाओं का प्रतिपादन किया है। उन्होंने चेतना के संदर्भ में कहा है कि- “मानव क्रिया व्यापार, व्यवहार से संबंधित है। जो प्रतिक्रियाएँ विचार गम्य हैं, सामाजिक नियम परंपरा से बंधी हैं, नीति-अनीति भाव से संचालित हैं वे इस सिद्धांत से परिचालित होती हैं।”³

मानव शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार की क्रिया करता है। जैसे- खेलना, कूदना, काम करना, सोचना, समझना, चिंतन करना। किंतु मनोविज्ञान में चेतना के अंतर्गत केवल उन्हीं क्रियाओं पर विचार किया जाता है जो मस्तिष्क से जुड़ी होती हैं, मानसिक होती हैं। मनुष्य किस परिस्थिति में क्या सोचता है? क्या समझता है? किस पर सर्वाधिक विचार करता है? आदि बाते चेतना के अंतर्गत आती हैं। व्यक्ति जब किसी वस्तु को देखता है तो उस वस्तु के संबंध में कई विचार उसके मन में उठते हैं। यही नहीं तो कई बार हम संसार के उस स्थान को भी देख लेते हैं जो हमारी आँखों के सामने नहीं है। इसी शक्ति को चेतना नाम दिया है।

फ्रायड ने चेतना की तीन अवस्थाएँ बताई हैं। इंद, अहम, पराअहम। यह तीनों अवस्थाएँ एक-दूसरे में इतनी जटिलता से उलझी हैं कि इनमें अंतर बताना बड़ा कठिन जान पड़ता है। ‘इंद’ मनुष्य को जन्मजात प्राप्त होती है। इसे प्रथम श्रेणी में रखा है। इसे अर्पित चेतना भी माना जाता है। इंद में ऊन भावनाओं का समावेश होता है जो यौन मूल प्रवृत्ति की ऊर्जा से संबंधित रहती हैं और हर स्थिति में ऊन भावनाओं की संतुष्टि चाहती हैं। यदि सही समय इसे काबू नहीं किया गया तो यह वि.ति भी बन सकती है। ‘अहम’ अवस्था जन्मजात प्राप्त नहीं होती है। इंद के उपरांत उसका जन्म होता है। इसे द्वितीय श्रेणी में रखा है। इंद के भीतर उमड़ी भावनाओं की पूर्ति करना ही अहम का लक्ष्य है और इसी कार्य की पूर्ति के लिए इंद के उपरांत व्यक्तित्व में अहम की उत्पत्ति होती है। ‘पराअहम’ चेतना की अंतिम

अवस्था हैं। इंद, अहम की तुलना में इस अवस्था का विकास देर से होता है।

चेतना ऐसी शक्ति है जो अपने द्वारा सृष्टि को संचालित करती है। चेतना मन या बुद्धि से जुड़ी होती है और समय-समय पर अपनी प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करती है। इस संदर्भ में अर्चना जैन कहती हैं- "चेतना सभी प्रकार के मानसिक अनुभवों का संग्रहालय है।"⁴ जैसे- एक छोटासा बालक भूक लगने पर रोता है, अपने परिजनों को देखकर खुश होता है और अनभिज्ञ व्यक्ति द्वारा उठाए जाने पर या पास आने पर डर जाता है। यह उसकी चेतना की प्रतिक्रियाएँ हैं। ईर्ष्या, जलन, कुढ़न, कुंठा, प्रेम, दुख आदि मानसिक अनुभव चेतना द्वारा समय-समय पर प्रकट होते हैं।

मानव चेतना उसकी व्यक्तिगत उपज न होकर वह परंपरागत चलते आ रहे सामाजिक संस्कार का परिणाम है। जिस तरह एक व्यक्ति में शारीरिक या बाहरी रूप में अपने पूर्वजों से आंशिक समानताएँ विद्यमान रहती हैं। ठीक उसी तरह चेतना भी मानसिक या भीतरी रूप में वंश परंपरागत अर्पित होती है। इस संदर्भ में 'डिक्शनरी ऑफ फिलोसॉफी' के चेतना संबंधी विचार हैं- "चेतना वस्तुनिष्ठ यथार्थ पर चिंतन का सर्वोच्च स्वरूप है, जो केवल मनुष्य में पाई जाती है। चेतना उन सभी मानसिक क्रियाओं का योग है जो सक्रिय रूप में सहायक होती है। चेतना का जन्म मनुष्य की सामाजिक उत्पादन प्रक्रिया में होता है और यह भाषा से जुड़ी होती है। मनुष्य एक ऐसे संसार में जन्म लेता है जहाँ उसके पूर्वजों द्वारा अनेक वस्तुओं का निर्माण किया गया है। मनुष्य इन वस्तुओं का एक विशिष्ट उद्देश के लिए प्रयोग करता है। इसके प्रयोग के लिए मनुष्य अपनी समझ को विकसित करता है। इसी के साथ मनुष्य में चेतना का भी विकास होता है।"⁵

मानव व्यक्तित्व में चेतना की अहम भूमिका है। चेतना का उत्तरोत्तर विकास होता रहता है। एक छोटे बालक

के चेतना की तुलना में एक प्रौढ़ की चेतना काफी प्रगल्भ होती है। चेतना के विकास में परिवार, समाज आदि का अहम योगदान होता है। व्यक्ति जितना अधिक सामाजिक रहेगा उतना ही उसके व्यक्तित्व में निखार आता है। जैसे-शहरी समाज की तुलना में आदिम जनजाति का विकास काफी मात्रा में कम पाया जाता है। वह अभी भी पिछड़ी हुई है। इसका एकमात्र कारण उनका सामाजिकरण में अभाव है। चेतना के अविकसितता के कारण आज भी वह समाज से हटकर जंगलों में घूम-घूमकर अपना जीवन काट रही है।

डॉ. नगेंद्र ने चेतना के संदर्भ में कहा है कि- "चेतना मन का छोटा सा द्वीप समझा जाने लगा, जिसमें मन कि तुलना एक बड़े सागर से की है। जिसमें चेतना एक छोटासा द्वीप है। चेतना विचारशील है, तर्कयुक्त है और निति-अनीति का भाव इसमें सदा रहता है, इसकी इच्छाएँ, आकांक्षाएँ, अनुभूतियाँ विचारगम्य होती हैं।"⁶ मनुष्य अपनी आँखों से अनगिनत वस्तुओं को देखता है, निहारता है। परंतु केवल कुछ ही वस्तुओं के बारे में वह सोचता है, विचार, चिंतन करता है। उसे दृष्टिगत होने वाली वह चीजे सागर कि भांति क्षितिज तक फैली हुई है। परंतु जिन पर उसकी दृष्टि टिकी रहती है वह एक छोटे से टापू कि तरह है। मन में तो अनगिनत भाव उठते हैं किंतु चेतना किसी एक को ही लक्ष्य करके उसके संबंध में विचार और तर्क चलाती है। चेतना किसी भी वस्तुके निति-अनीति के बारे में तर्क प्रस्तुत करती है। मन एक विस्तृत संकल्पना है परंतु चेतना मन का एक छोटासा हिस्सा है। चेतना पक्ष-विपक्ष, तार्किकता, निति-अनीति आदि में उलझी रहती है। यही वजह है कि मनुष्य किसी कार्य के लिए शारीरिक क्रिया तब तक नहीं करता जब तक चेतना द्वारा उसे स्वीकृति नहीं मिलती। जैसे-यदि कोई सर्प मनुष्य कि ओर बढ़ा आ रहा है। धीरे-धीरे मनुष्य और सर्प की दूरी घटती जा रही है फिर भी मनुष्य किसी प्रकार कि शारीरिक क्रिया नहीं करता है। लेकिन जैसे ही सर्प

अपना फन निकालकर उसके सामने खड़ा हो जाता है, तब चेतना द्वारा प्रेरणा मिलने पर मनुष्य शारीरिक क्रिया करता है। वह लाठी लेकर उसका सिर कुचल देता है या फिर खुद वहां से हट जाता है। मनुष्य केवल चेतना के कारण ही कोई कार्य करता है। इस संदर्भ में 'इनसाइक्लोपिडिया ऑफ ब्रिटानिका' के चेतना संबंधी विचार हैं- "वह शक्ति जिसमें मस्तिष्क को अपने आप के अस्तित्व और मानसिक घटना प्रक्रियाओं के प्रति बोध होता है। यह प्राणियों कि उस स्थिति को व्यक्त करती है जिसमें व्यक्ति अपने आप के अस्तित्व और मानसिक घटनाओं और स्थितियों के प्रति जागरूक रहता है।"⁷

चेतना के तीन स्तर माने गए हैं; चेतन, अवचेतन और अचेतन। चेतन मन को ही सक्रिय माइंड भी कहते हैं। मनुष्य जब कोई कार्य सक्रिय हो कर करते रहता है तब उसे चेतन मन कहा जाता है। कोई क्रिया जब पहली बार कि जाती है तब उस समय मन चेतन अवस्था में होता है। जैसे-लडका जब साइकिल चलाना सिखता है तो उसका ध्यान पुरी तरह से साइकिल पर, उसके हर हिस्से पर (जिनका वह उपयोग कर रहा है) होता है। उसकी नजर बिल्कुल सामने होती है। ऐसी अवस्था को चेतन मन कहा गया है। अवचेतन मन चेतन मन और अचेतन मन के बीच सेतु का कार्य करता है। अवचेतन मन अत्याधिक शक्तिशाली होता है। किसी भी व्यक्ति ने यदि अवचेतन मन पर विजय प्राप्त कर ली तो उसके लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं है। इस संसार में महान लोगो कि सफलता का रहस्य यही है। अवचेतन मन कि अवस्था में हमारे मन से डर, चिंता हट जाती है। हम कोई भी कार्य बिना डर के करने लगते हैं। उदा. लडका जब एक बार साइकिल चलाना सिख जाता है, तो वह बिना झिझक के साइकिल चलाता है। अब उसका ध्यान न तो साइकिल के किसी हिस्से पर जाता है, न ही वह सीधा सामने देखकर साइकिल चलाता है। अब वह बाते करते हुए या गाना

गाते हुए भी साइकिल चलाता है। यही अवचेतन मन कि अवस्था है। चेतना का तिसरा स्तर है अचेतन मन। इसे 'बेहोश मन' भी कहा जाता है। वह बाते जो हमें याद नहीं रहती या जिन्हें हम भूल गए हैं। जरूरत पडने पर बहुत ही यत्नो से जिन्हें याद दिलाया जाता है उन्हें मन की अचेतन स्तर में रखा जाता है।

चेतना द्वारा ही हमें ज्ञान मिलता है। मन में भाव जागृत होते हैं और उन भावों के अनुरूप मानव क्रिया करने लगता है। इसी कारण चेतना की तीन प्रमुख विशेषताएँ मानी जाती हैं- ज्ञानात्मकता, भावात्मकता और क्रियात्मकता। चेतना से ज्ञान कि अनुभूति होती है। ज्ञान प्राप्ति पश्चात विभिन्न भावों का संचार होता है। भावों कि पूर्ति हेतु क्रिया होने लगती है। जैसे-हम जब किसी उपवन में जाते हैं तो वहां के विविध फूलों को देख कर हमें उनके स्वरूप का ज्ञान होता है। उन फूलों को देखकर प्रिय, अतिप्रिय और अप्रिय भाव मन में उठते हैं। प्रिय भाव हमें उन फूलों के करीब ले जाते हैं। अतिप्रिय भाव हमें उन्हें छूने के लिए लालायित करते हैं और अप्रिय भाव हमें उनसे दूर हटाते हैं। इस संदर्भ में प्रसिद्ध दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक विलियम जेम्स का मत है- "प्रसंग, घटना, क्रिया, परिस्थिति, बाह्य हलचल आदि ऊपरी बातें हैं। मनोव्यापारों में चलनेवाली प्रतिमा ही वास्तविक प्रेरक शक्ति है।"⁸ मानव शरीर के प्रत्येक अंग को सुचारु रूप से संचालित करणे का काम चेतना ही करती है। इसी कारण व्यक्तिकी शारीरिक क्रिया कि अपेक्षा मानसिक क्रिया को अत्यधिक महत्वपूर्ण माना जाता है।

समारोप:-

चेतना के द्वारा ही हम आसपास के परिवेश का ज्ञान प्राप्त करते हैं और उस परिवेश से एकरूप होते हैं। चेतना हर किसी में अलग-अलग होती है। ऐसा जरूरी नहीं कि एक व्यक्ति जैसा सोचता है वैसा ही दूसरा व्यक्ति या प्राणी या कोई अन्य जीव सोचता हो। एक

की चेतना को दूसरा अनुभव नहीं कर सकता। किसी वस्तु के प्रति देखने का उद्देश्य या नजरिया हर किसी का अलग-अलग होता है। मनुष्य के मन में किसी भी वस्तु को देखकर जो भावनाएं उठती हैं वैसे ही भावनाएं दूसरे जीव के मन में नहीं उठती हैं। सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक की चेतना प्राणिशास्त्रीय है। परंतु मनुष्य चेतना उससे कहीं अधिक ऊंचे स्तर की चेतना है। प्राणियों में कुछ प्राणी दिवाचर तो कुछ तमचर दिखाई देते हैं। दिवाचरों की चेतना दिन में और तमचरों की चेतना रात में कार्यरत होती है। परंतु मनुष्य चेतना यथार्थ स्थिति को जानकर भविष्य की योजना भी बना सकती है। मनुष्य चेतना का विकास सृष्टि के समस्त जीवों की तुलना में अत्यधिक हुआ है। चेतना विकास के कारण ही मनुष्य जानवर से इंसान बन सका है। आग की खोज, घर बनाकर रहना, पत्तों की जगह वस्त्र पहनना आदि बातें चेतना के विकास की ही द्योतक हैं।

संदर्भ:-

1. धर्मद्रकुमार गुप्ता, संस्कृत-हिंदी शब्दकोश, पृ. सं. - 1982
2. संपा. नवल, नालंदा विशाल शब्दसागर, पृ. सं. - 388
3. संपा. डॉ. नगेंद्र, मानविकी परिभाषा कोश (मनोविज्ञान खंड), पृ. सं. - 233
4. अर्चना जैन, प्रेमचंद निबंध साहित्य में सामाजिक चेतना, प्र. सं. पृ. सं. - 16
5. संपा. आई. प्रोलॉव, डिक्शनरी ऑफ फिलोसॉफी, पृ. सं. - 82
6. डॉ. नगेंद्र, मानविकी परिभाषिक कोश, पृ. सं. - 50
7. इनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटानिका, वॉल्यूम - 6 पृ. सं. 364
8. संपा. डॉ. नगेंद्र, भारतीय साहित्य कोश, पृ. सं. - 405